International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 30-31

कालिदास के नाटको मे संवेदना और प्रेम

डॉ० सुशील कुमार तिवारी
प्रवक्ता संस्कृत, एस० आर० एस० महाविद्यालय, नरैनी, बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
मानव को मानव के साथ सम्बन्ध जोडने को यहॉ तक कि जगत के विविध जीवो के साथ मानवीय सम्बन्ध को बनाये रखने का यही संवेदना है।
मानवता को उन्होने सर्वोच्च स्थान दिया है और उसके प्रति अपनी आस्था प्रकट कि है उनकी कृतियो में दिव्य चरित्रो की चर्चा है किन्तु उन्होने उन्हे मानवीय भावनाओ से ही ओत प्रोत देखा है।
कालिदास मानव और देव मे विशेष अन्तर न मानते हुए श्रोत–स्मार्त धर्म के अनुसार उनमें केवल इतना ही अन्तर मानते है कि पुण्यकर्मा मानव देव हो जाता है और क्षीण पुण्य पुनः मानव हो जाता है। जैसे उनके दुष्यन्त इन्द्र की सहायता के लिए गये। शकुन्तला देव और मानव के संयोग से उत्पन्न होते हुए निःसंकोच रुप से देवो के आश्रम मे रहती हुई अपने पुत्र का पालन करती रही।
इस प्रकार मानव देवो का दास न होकर उनकी समकक्षता प्राप्त कर सकता है यह प्रदर्शित कर कालिदास ने मानव के गौरव के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है।

मूल शब्द : मानवता, संवेदना।

प्रस्तावना
कालिदास ने मनुष्य की परिपूर्णता प्रकृति के साहचर्य में ही देखी है जहॉ मनुष्य सहजात वृत्तियो के इशारो पर ऑख मूदकर आगे बढने लगता है वहॉ विनाश को निमन्त्रण देता है। परन्तु जहॉ वह तपस्या से अपने को ऐसा बना लेता है कि विश्व चराचर की प्रकृति उसके इशारे पर चलने लगती है तबवह अमृतत्व को निमन्त्रण देता है कालिदास ने तपोवनो मे प्रकृति के इंगितानुयायी रुप का साक्षात्कार किया उनके सभी ग्रन्थो मे प्रकृति का यह संयत मोहन रुप अवश्य मिल जाता है।
ऐसे कम ही व्यक्तियो ने पृथ्वी पर चरण क्षेप किया होगा जिन्होने जीवित प्रकृति के इतने अधिक रुपो का सूक्ष्म निरीक्षण किया हो जितना कालिदास ने यद्यपि उनका निरीक्षण कवि का था वैज्ञानिक का नही कालिदास का प्रकृति ज्ञान केवल सहानुभूति मूलक ही नही है अपितु वह सूक्ष्मतया सटीक है हिमालय की हिम राशि तथा पवन संगीत और पवित्र गंगा की शक्ति शालिनी धारा ही केवल उनके अधिकार की वस्तुये नही है छोटी–छोटी सरिताये विटप तथा छोटे से छोटा फूल उनकी सृष्टि व्यापिनी दृष्टि से बाहर नही जा सके हैं।

शोध का उद्देश्य
1. भाषा एव साहित्य के प्रति अनुसंधानात्मक दृष्टि कोण प्रदान करना
2. वातावरण के प्रति संवेदन शील एवं सहृदय होना।
3. विविध परिस्थितियो के अनुकूल मानवीय व्यवहार से छात्रो को परिचित कराना।
4. मानव–प्रकृति एवं मानव चरित्र से उन्हे परिचित होने के अवसर प्रदान करना।
5. छात्रो को चिंतन प्रश्नोत्तर वार्तालाप भाषण कथोपकथन आदि अवसरो पर प्रभावोत्पादक ढंग से अपने भावो को व्यक्त करने की कला का ज्ञान देना।

संवेदना का स्वरुप
संवेदना सबसे साधारण मानसिक अनुभव और मानसिक प्रक्रिया का सबसे सामान्य रुप है यह ज्ञान–प्राप्ति की पहली सीढी है यह सभी प्रकार के ज्ञान मे होती है। इसके अभाव मे किसी प्रकार का अनुभव सम्भव नही है। संवेदना शब्द का प्रयोग सब चेतना अनुभवो में सबसे सरलतम का वर्णन करने के लिए किया जाता है। कण्व के आश्रम मे रहती हुई शकुन्तला वृक्षो को अपना सगा भाई तथा लताओ को सगी बहिन मानती है और उसी प्रकार उनके साथ व्यवहार भी करती है वह कहती है :–

न केवल तात नियोग योग एव अस्ति मे सोदर स्नेहोऽप्येतेषु

इसी कारण से वह जब तक इनको जल नही पिला देती है तब तक स्वयं जलपान नही करती है आभूषणो से प्रेम होने पर इनसे किसलयो को नही तोडती है पुष्पो के प्रथम आगमन पर जिसे हर्ष होता है इसे लक्ष्य कर महर्षि इस प्रकार कहते है :–

पातु न प्रथम व्यवस्यति जलं युष्मास्व पीतेषुया।
नादन्ते प्रियमण्डाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवमं।।
आद्ये वः कुसुम प्रसूति समये यस्याः भवत्युत्सवः।
सेयं याति शकुन्तला पति गृहे सर्वैनुज्ञायताम् ।।

महर्षि कण्व के कथन को सुनकर प्रकृति भी कोयल की मधुर कूक से अपनी स्वीकृति प्रदान कर देती है :–

परभृत विरुत कलं यथा प्रतिवचनी कृतमे भिरी दृशम

शकुन्तला की विदा वेला पर आश्रमस्थ पशु पक्षी विकल हो उठते है मृगिया कुश खाना छोड देती है मयूर नाचना बन्द कर देते है और लताये अपने पीले पत्ते गिराकर मानो अपनी प्रिय सहचरी के वियोग

से अश्रुपात करने लगती है –

उद्गलित दर्भकवला मृग्यः परिव्यक्त नर्तना मयूराः
अपसृत पाण्डु पत्रा म०चन्त्यश्रूणीव लताः।।

अभिज्ञान शाकुन्तल में अन्तः प्रकृति एवं बाह्य प्रकृति का सुन्दर साम०जस्य है मानव मन की भावनाये वाह्म प्रकृति भावनाओ के रुप मे प्रतिविम्बित होती है संगीत मे जैसे समस्त प्रकृति का स्वर समागम हो जाता है वैसे ही शकुन्तला में सम्पूर्ण प्रकृति का स्वास्थ्य समाविण्ट हो गया।

प्रेम का स्वरुप

कालिदास ने यत्र तत्र प्रसंगानुसार कौटुम्बिक जीवन के सुख निर्देश है कि सभी को गुरु माता पिता बन्धु पत्नी दास सन्तान एंव समाज से प्रेम तथा सहानुभूति रखना आवश्यक है आदर्श कौटुम्बिक जीवन के लिए गुरुजनो तथा अतिथियो आदर करना आवश्यक है। कालिदास की रचनाओ से ऐसा प्रतीत होता है कि वे प्रौढ़ विवाह के पक्षपाती थे उनकी प्रायः सभी नायिका अपनी प्रौढावस्था मे ही विवाह करती है जब कि वे विविध कला प्रवीण एवं स्वेच्छानुसार पति वरण के लिए समर्थ हो जाती है मालविका शकुन्तला इन्दुमती सभी अपनी प्रौढावस्था मे ही विवाह करती है जब कि वे विविध कला प्रवीण एवं स्वेच्छानुसार पति वरण के लिए समर्थ हो जाती है मालविका शकुन्तला इन्दुमती सभी अपनी प्रौढावस्था मे स्वेच्छानुसार पति वरण करती है पर उनकी यह स्वेच्छा आधुनिक प्रीति विवाह की द्योतक नही और न कालिदास प्रीति विवाह के समर्थक ही जान पडते है यदि ऐसा होता तो वे शकुन्तला के गान्धर्व विवाह का दुष्पारिणाम न दिखलाते । शकुन्तला ने महर्षि कण्व की अनुपस्थिति मे स्वेच्छानुसार पतिवरण किया था। इसलिए कवि ने दुष्यन्त द्वारा उसका परित्याग दिखलाया है बन्धुजनो व गुरुजनो की सम्मति के बिना केवल पारस्परिक प्रेम मात्र से विवाह वास्तव मे कालिदास की दृष्टि मे एक अपराध था।

इसलिए शारंगरव राजा से कहता है :–

मुष्टं प्रति ग्राहयता स्वमर्थ पात्रीकृतो दस्युरिवासियेन

इसके अतिरिक्त कालिदास ने सर्वत्र ही स्वंयवर या गन्धर्व विवाहो का ही वर्णन नही किया है उन्हें वास्तव मे स्मृति प्रतिपादित ब्राह्म विवाह ही मान्य था रघुवंश मे अज के अतिरिक्त अन्य राजाओ के विवाह ब्राह्म विधि से ही हुये है और उनका परिणाम सुखकर हुआ है क्योकि इन राजाओ ने अपने शौर्य एंव दया दाक्षिष्यादि गुणो के कारण ही सत्पत्नियॉ प्राप्त की थी न कि बाहरी सौन्दर्य पर मुग्ध होकर। यद्यपि कालिदास ने प्रीति विवाह की ओर अपनी उदासीनता नही दिखलाई है तथापि उनकी यह निश्चित धारणा प्रतीत होती है कि कौटुम्बिक सुख का साधन ब्राह्म विवाह है उनकी दृष्टि मे केवल ब्राह्म सौन्दर्य पर टिका हुआ प्रेम स्थायी नही होता। इसलिये प्रेमी जनो को विवाह के पूर्व माता पिता एंव अन्य गुरुजनो की अनुमति लेना अत्यावश्यक है।

कुमार सम्भव मे पार्वती शिव को प्रसन्न करने के बाद भी तुरन्त उनसे विवाह नही करती पिता की सम्मति लेना आवश्यक बतलाती है।

शाकुन्तल के भी ये वाक्य :–

धर्म चरणोऽपि परवशोऽयं जनःपरवर्ती खलुतत्र भवती न च संनहितो गुरुजनः

इसी मान्यता की ओर संकेत करते है।

निष्कर्ष

भवभूति की सीता के समान शकुन्तला भी पतिव्रता है पति ने बिना कारण ही यद्यपि उसका परित्याग कर दिया है तथापि वह सदैव उसका चिन्तन करती है और विरहिणी स्त्रियो की भॉति ही अपने दिन व्यतीत करती है सानुमती द्वारा राजा के पश्चाताप का समाचार जानकर तथा अदिति के आश्वासन द्वारा पुर्नमिलन की आशा पर वह अवलम्बित रहती है। उसे अपनी सखी के ये वचन :–

गुर्वपि विरह दुःखमाशाबन्ध साहयति

सदा आश्वासन देते रहते है। राजा के पुर्नदर्शन पर वह प्रत्याख्यान के लिए उस पर क्रोध नही करती प्रत्युत जब राजा स्वयं पश्चाताप करता हुआ अपने को दोषी ठहराने लगता है तथा इसके चरणो परनत होकर क्षमा याचना करता है तब भी वह केवल इतना ही कहती है–

अथ–कथमार्य पुत्रेण स्मृतो दुःखभाग्यं जन

उसके इसी त्याग एंव धर्म से प्रभावित होकर मारीच उसे आशीर्वाद देते है नाटक यह संदेश देता है कि आकस्मिक प्रेम सच्चा प्रेम नही होता–

अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात संगतं रह

जिस प्रेम मे कोई बन्धन नही नियम नही उसका परिणाम सुखकर नही होता उन्होने दाम्पत्य प्रेम को ही महत्व दिया है और उसकी पूर्णता संतानोत्पत्ति मे ही मानी है मतवाला बना देने वाला प्रेम कर्तव्य विमूढ कर देता है अतः विवेक पूर्ण प्रेम ही श्रेयस्कर होता है।

मानव को मानव के साथ सम्बन्ध जोडने का यहॉ तक कि जगत के विविध जीवो के साथ मानवीय सम्बन्ध को बनाये रखने को मूल यही संवेदना है आज समाज में संवेदना का अभाव सा दिखाई दे रहा है आज पिता और पुत्र मे तनाव है पडोसियो की बात करना और संवेदना जन्म परिस्थितियो का निर्माण करना हमारा दायित्व है यही हमारे शोध पत्र का उद्देश्य है –:

सन्दर्भ

1. अभिज्ञान शाकुन्तलम :– कालिदास
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास :– बल्देव उपाध्याय
3. कालिदास मानव शिल्पी :– डॉ0 रेवा प्रसाद द्विवेदी
4. विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री :– रामशकल पाण्डेयै